

हिंदी भाषा भारती – कक्षा 8

पाठ 2 : आत्मविश्वास

BHUNI DADA PUBLIC SCHOOL GUMGAON

Presented By | Prem Janghela

Whatsapp : +91 9752776923 Email: premjanghela02@gmail.com



बोध प्रश्न



प्रश्न 1: शब्दों के अर्थ

1

2

3

4

5

6

7

8

9

- दुर्भाग्य = बुरा भाग्य
- आत्महीनता = मन की हीन भावना
- एकाग्रता = तल्लीन
- क्षमता = योग्यता, सामर्थ्य
- विश्वविख्यात = संसार में प्रसिद्ध
- तल्लीनता = किसी काम में लीन होना
- अभंग = अटूट, अखण्ड
- सुगमता = आसानी
- दुविधा = असमंजस
- यथापूर्व = पहले की तरह
- अविचल = स्थिर, दृढ़
- सूक्ति = अच्छा कथन, सुभाषित
- अखण्ड = समग्र रूप से, अटूट
- मर्सिया = शोक गीत

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।

(क) बाली को क्या वरदान प्राप्त था ?

उत्तर: बाली को ऐसा वरदान प्राप्त था कि जो भी उसके सामने आता, उसकी आधी ताकत उसमें आ जाती थी। इस कारण बाली अपने सामने आये हुए व्यक्ति को आसानी से पछाड़ देता था।

(ख) राम बाली के सामने आकर क्यों नहीं लड़े?

उत्तर: बाली को अपने शत्रु (विरोधी) के आधे बल को खींच लेने का वरदान प्राप्त था। अतः राम उसके सामने आकर नहीं लड़े। यह वरदान बाली को शंकर भगवान ने दिया था। राम भगवान शंकर के वरदान का सम्मान करते थे।

(ग) कृष्ण ने महाभारत में सर्वोत्तम काम क्या किया?

उत्तर: महाभारत में कृष्ण ने न्याय के साथ पाण्डव पक्ष का सहयोग करते हुए निर्वासित पाण्डवों को उनका अधिकार प्राप्त करवाया। उनमें आत्मविश्वास पैदा किया।

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए।

(क) सामने वाले की आधी ताकत अपने में खींच लेने की शक्ति हम सब में है। कैसे?

उत्तर: सामने वाले की आधी ताकत अपने में खींच लेने की शक्ति हम सब में है। यह शक्ति आत्मविश्वास की है। यह शक्ति हम सबको प्राप्त है, परन्तु हम सबको अपनी इस आत्मशक्ति की पहचान नहीं है और न उसका उपयोग ही किया है। इस आत्मशक्ति का विकास विश्वास से होता है। हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी सामर्थ्य में विश्वास पैदा करना होगा। हम अपने विरोधियों से सदा पिटते रहे हैं, क्योंकि उनके द्वारा पीटे जाने को हमने अपने लिए अनिवार्य मान लिया। यह सब इसलिए हुआ कि हमारे अन्दर कायरता और आत्महीनता ने स्थान बना लिया है जिससे हम डरपोक हो गये। अच्छे संस्कार हमसे दूर हो गये। बुरे संस्कारों का प्रभाव ऐसा पड़ा कि हम अपने बल की सही नापतौल नहीं कर सके। परिणाम यह हुआ कि विरोधियों को हमने अपनी अपेक्षा ताकतवर मान लिया, परन्तु आत्महीनता और कुसंस्कारों से छुटकारा प्राप्त करें और आत्मविश्वास से भरे आत्मबल के द्वारा हम अपनी विरोधी की आधी शक्ति अपने में खींच सकते हैं।

1

2

3

4

5

6

7

8

9

(ख) लेखक ने 'हेलन केलर' का उदाहरण देकर हमें क्या समझाना चाहा है?

उत्तर: हेलन केलर एक प्रसिद्ध और उच्च कोटि की विचारक थीं। उन्होंने अपनी एक सूक्ति में कहा था कि हमें जब सफलता प्राप्त होती है तो उससे हमें सुख मिलता है, परन्तु लक्ष्य प्राप्ति में विफल होना निश्चय ही सुख के द्वार के बन्द होने के समान है। हम उस सफलता के न मिलने पर निराश और हतोत्साहित हो उठते हैं परन्तु उस निराशा की दशा में हम उत्साह से रहित हो जाते हैं। आत्मशक्ति और लक्ष्य प्राप्ति की सामर्थ्य से अपने विश्वास को खो बैठते हैं जबकि होना यह चाहिए कि उद्देश्य प्राप्ति हेतु अपने अन्दर की शक्ति को विकसित करना चाहिए और उसके प्रति मजबूत श्रद्धा और विश्वास रखना चाहिए। एक बार विफल होने पर हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। सफलता पाने तक अपने प्रयास (कोशिश) चालू रखने चाहिए।

1

2

3

4

5

6

7

8

9

(ग) “आत्मविश्वास के बूते पर जीवन में सब कुछ करना संभव है,” किसी एक महापुरुष का उदाहरण देते हुए उक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: आत्मविश्वास की ताकत कठिनाई पर विजय प्राप्त करने की सामर्थ्य देती है। आत्मबल के विकास से हम सफलता के मार्ग पर आगे ही आगे बढ़ते जाते हैं। अपने आत्मबल के द्वारा मनुष्य अवश्य ही भाग्यवान बन जाता है। अतः भाग्यवान वही है जो उचित दिशा में अपने कर्तव्य का पालन करता है और अपने लक्ष्य की साधना में अपनी सामर्थ्य और क्षमता में पूरा विश्वास रखता है। मन में सदा अच्छे शुभ विचारों को स्थान दीजिए। हमें सफलता और सौभाग्य दोनों ही प्राप्त होंगे।

निराशा और उत्साहहीनता मनुष्य को आत्मबल से हीन बनाती है। जीवन सुख-दुःख के उतार-चढ़ाव से युक्त है। हम सदा उतार (दुःख) की बातें ही नहीं सोचते रहें। इन दुःखों का क्या कारण है, जीवन में उतार क्यों आया-इस पर विचार करना होगा और चढ़ाव (उन्नति) के उपाय करते हुए ऊँचे भावों से युक्त मन को मजबूती देते रहना चाहिए। अन्त में सुख का द्वार अवश्य खुलेगा-जो जीवन की सफलता में छिपा हुआ है। विजयमाला उन्हें अर्पित की जाती है जो चुनौतियों का मुकाबला करते हैं और सफल होते हैं।

हमारे समक्ष नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का उदाहरण है, जिन्होंने अपने जीवन में सिर्फ चुनौतियों को ही चुना और सफलताओं के शिखर पर पहुँचते रहे। उनमें अटूट आत्मविश्वास था। इसके बल पर उन्होंने अपने विरोधियों की प्रत्येक कुचाल और कुचक्र को नष्ट किया। जीवन संघर्ष में सफलता के लिए अपनी क्षमता और सामर्थ्य में अखण्ड विश्वास होना चाहिए। इसके कारण जीवन में सब कुछ किया जाना सम्भव होता है।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के स्थान पर हिन्दी मानक शब्द लिखिए –
(ताकत, विजिटिंग कार्ड, इशारा, मर्सिया)

उत्तर:

- ताकत = बल
- विजिटिंग कार्ड = पहचान पत्र (वह कार्ड जिसमें स्वयं का परिचय रहता है)
- इशारा = संकेत
- मर्सिया = शोक-गीत

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय और उपसर्ग पहचान करके अलग-अलग कीजिए –
तल्लीन, दुर्भाग्य, शक्तिशाली, कायरता, एकाग्रता, खण्डित, अभागा।

उत्तर:

- तल्लीन = उपसर्ग: 'त', मूल शब्द: 'लीन'
- दुर्भाग्य = उपसर्ग: 'दुर्', मूल शब्द: 'भाग्य'
- शक्तिशाली = मूल शब्द: 'शक्ति', प्रत्यय: 'शील'
- कायरता = मूल शब्द: 'कायर', प्रत्यय: 'ता'
- एकाग्रता = मूल शब्द: 'एकाग्र', प्रत्यय: 'ता'
- खण्डित = मूल शब्द: 'खण्ड', प्रत्यय: 'इत'
- अभागा = उपसर्ग: 'अ', मूल शब्द: 'भागा'

1

2

3

4

5

6

7

8

9

प्रश्न 5. निम्नलिखित सामासिक पदों का समास विग्रह करते हुए उनमें निहित समास पहचान कर लिखिए –
आत्मविश्वास, कूड़ाघर, खन्दक-खाइयों, शक्तिहीन, यथापूर्व, विश्वविख्यात।

उत्तर:

- आत्मविश्वास = आत्मा + विश्वास (तत्पुरुष समास)
- कूड़ाघर = कूड़ा रखने का घर (तत्पुरुष समास)
- खन्दक-खाइयों = खन्दक और खाइयाँ (द्वंद्व समास)
- शक्तिहीन = शक्ति से हीन (बहुव्रीहि समास)
- यथापूर्व = जैसे पहले था (अव्ययीभाव समास)
- विश्वविख्यात = विश्व में विख्यात (तत्पुरुष समास)

1

2

3

4

5

6

7

8



Thank you

Presented By | **Prem Janghela**

Name : *Prem Janghela*

Phone : *+91 9752776923, 8223963014, 9754113218*

Email : *premjanghela02@gmail.com*